नौकर

पाठ का सार / प्रतिपाद्य -

प्रस्तुत पाठ 'नौकर' के लेखक 'अनु बंद्योपाध्याय' हैं। पाठ में गाँधी जी की विशेषताओं का उल्लेख किया गया है। किसी भी कार्य को छोटा नहीं समझना चाहिए। गाँधी जी अपना काम स्वयं किया करते थे। वे किसी भी कार्य को करने में संकोच नहीं करते थे। आश्रम के बाकी सब लोग जो कार्य करते थे गाँधी जी भी उसमें पूरा सहयोग देते थे। जब कोई कार्य किसी से ठीक से नहीं होता था तो उस कार्य को वे स्वयं पूरा करने में जुट जाते थे। आश्रम के लोग जब भोजन करने बैठते तो वे स्वयं खाना पड़ोसते थे। गाँधी जी द्वारा भोजन पड़ोसे जाने के कारण वे लोग चुपचाप उबला हुआ भोजन भी खा लेते थे। यदि आश्रम में कोई मेहमान आ जाता तो गाँधी जी स्वयं उसका आदर सत्कार किया करते थे। एक बार गाँधी जी दक्षिण अफ्रिका गए हुए थे। वहाँ भारतीय छात्रों ने उनके लिए एक भोज का आयोजन किया हुआ था। लेकिन वहाँ उन्हें कोई पहचानता नहीं था। गाँधी जी जब वहाँ गए तो उन्हीं लोगों में सामिल हो गए तथा सभी कार्यों में उनका हाथ बटाने लगे। अंत में छात्रों के नेता द्वारा पहचाने जाने के बाद सबको पता चला कि यह दुबला-पतला व्यक्ति और कोई नहीं बल्कि स्वयं गाँधी जी हैं जिनके लिए इस भोज का आयोजन किया गया है। उनका यह मानना था कि हर वो कार्य जो उनके सामर्थय में है वो करेंगे। वो किसी और के कार्य को करने में भी संकोच नहीं करते थे। एक बार वो अपने किसी विदेशी मित्र से मिलने उनके घर गए। वहाँ उन्होंने देखा कि उस घर के नौकरों को घर के सदस्यों की तरह मिलवाया गया। गाँधी जी इससे बहुत प्रभावित हुए। उनका यह मानना था कि हमें घर के नौकरों को घर का सदस्य ही मानना चाहिए। हो सकता है इस कार्य में हमारा नुकसान हो लेकिन हम पूरी तरह से असफल नहीं हो सकते।

गाँधी जी की चारित्रिक विशेषताएँ -

(1) आत्मनिर्भर – गाँधीजी अपना कार्य स्वयं ही किया करते थे। वे किसी भी कार्य को छोटा नहीं समझते थे। अपने सामर्थ्य के अनुसार किसी भी प्रकार का कार्य करने में वे संकोच नहीं करते थे।

(2) मिलनसार – गाँधीजी किसी के साथ भी आसानी से घुल-मिल जाते थे। हर किसी के साथ उनका व्यवहार मित्रता पूर्ण था।

(3) नम्र – गाँधी जी अपने से बड़ों का बहुत आदर करते थे। एक बार वे भारत में एक कांग्रेसी नेता के संपर्क में आए। गाँधी जी उनका बहुत सम्मान किया करते थे। जब उन्होंने बहुत दिनों से इकट्ठा हुए पत्रों का जवाब देने का काम गाँधी जी को सौंपा तो उन्होंने पूरी निष्टा के साथ इस कार्य को सम्पन्न किया।

पाठ का उद्देश्य -

गाँधी जी के महान व्यक्तित्व से हमारा परिचय करवाना ही पाठ का मुख्य उद्देश्य है। एक महान व्यक्तित्व के स्वामी होने के साथ-साथ गाँधी जी में नम्रता भी थी। हमें भी गाँधी जी से प्रेरित होकर अहंकार का त्याग कर अहिंसा और प्रेम के मार्ग पर चलना चाहिए।

पाठ का संदेश -

प्रस्तुत पाठ के माध्यम से लेखक ने आत्मनिर्भरता के साथ-साथ सबको एक समान मानने का संदेश दिया है। पाठ में नीती परक मुल्यों को प्रस्तुत किया गया है।